ताप्ती समन्वय
06/05/26

नर्मदा महाविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा में सुख पर व्याख्यानमाला का आयोजन

नर्मदापुरम्, ताप्ती समन्वय। प्रज्ञा प्रवाह और भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस शासकीय नर्मदा महाविद्यालय के सभागार में परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें प्रज्ञा प्रवाह के विभाग संयोजक डॉ. संतोष व्यास, महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रवि उपाध्याय, डॉ. आलोक वर्मा, डॉ. के. जी. मिश्र ने 'भारतीय ज्ञान परंपरा में सुख की अवधारणा' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी श्रृंखला में डॉ. रवि उपाध्याय ने कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों में समरसता और सुख की अवधारणा परिलक्षित होती है, जिसमें समरसता के भाव मिलते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध पहलुओं पर भी अपने विचार रखे। डॉ. आलोक वर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की बात कही, साथ ही अपने दैनिक जीवन के विविध उदाहरणों से सुख और दु:ख के परिदृश्य को समझाया तथा सुख और आनंद में तात्विक अंतर को भी समझाया। इस अवसर पर डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र ने कहा कि सुख और दु:ख एक साथ चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें सुख के बाद दु:ख का आना निश्चित है लेकिन व्यक्ति को हर क्षण में सुख की अनुभूति होती रहनी चाहिए। स्वायतत्ता जीवन में सुख की अनुभूति कराती है। उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास के उदाहरण के माध्यम से बताया पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता। सुख का संबंध मानसिक सुख से है इसके साथ ही उन्होंने सुख के विविध प्रकारों पर भी अपनी बात रखी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. संतोष व्यास ने कहा कि जीव, जगत और जगदीश ज्ञान परंपरा की परिणति है जिसमें मानवीय मूल्य, समरसता इत्यादि विचार हमें उच्च आदर्श तक ले जाते हैं, इनके माध्यम से हमें सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने भारतीय न्याय व्यवस्था एवं पाश्चात्य न्याय व्यवस्था के तुलनात्मक उदाहरणों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को समझाया। इस अवसर पर 30 विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता कर जिज्ञासाओं को शांत किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. संतोष अहिरवार के द्वारा तथा आभार प्रदर्शन डॉ. राजेश दीवान के द्वारा किया गया।

'दुख का आना निश्चित, लेकिन हर क्षण सुख की अनुभूति होती रहनी चाहिए'

नवदुनिया प्रतिनिधि, नर्मदापुरम: प्रज्ञा प्रवाह और भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में नर्मदा महाविद्यालय के सभागार में परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें प्रज्ञा प्रवाह के विभाग संयोजक डा. संतोष व्यास, प्राध्यापक डा. रवि उपाध्याय, डा. आलोक वर्मा, डा. केजी मिश्र ने भारतीय ज्ञान परंपरा में सुख की अवधारणा विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी श्रृंखला में डा. रवि उपाध्याय ने कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों में समरसता और सुख की अवधारणा परिलक्षित होती है, जिसमें समरसता के भाव मिलते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध पहलुओं पर भी अपने विचार रखे। डा. आलोक वर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की बात कही, साथ ही अपने दैनिक जीवन के विविध उदाहरणों से सुख और दुख के परिदृश्य को समझाया तथा सुख और आनंद में तात्विक अंतर को भी समझाया। इस

महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता। ● नवदुनिया

अवसर पर डा. कृष्ण गोपाल मिश्र ने कहा कि सुख और दुःख एक साथ चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें सुख के बाद दुख का आना निश्चित है लेकिन व्यक्ति को हर क्षण में सुख की अनुभूति होती रहनी चाहिए। स्वायतत्ता जीवन में सुख की अनुभूति कराती है।

उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास के उदाहरण के माध्यम से बताया पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता। सुख का संबंध मानसिक सुख से है इसके साथ ही उन्होंने सुख के विविध प्रकारों पर भी अपनी बात रखी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. संतोष व्यास ने कहा कि जीव, जगत और जगदीश ज्ञान परंपरा की परिणति है जिसमें मानवीय मूल्य, समरसता इत्यादि विचार हमें उच्च आदर्श तक ले जाते हैं, इनके माध्यम से हमें सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने भारतीय न्याय व्यवस्था एवं पाश्चात्य न्याय व्यवस्था के तुलनात्मक उदाहरणों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को समझाया। इस अवसर पर 30 विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता कर जिज्ञासाओं को शांत किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. संतोष अहिरवार के द्वारा तथा आभार प्रदर्शन डा. राजेश दीवान के द्वारा किया गया।